सृष्टि से सत्संग तक

समय के प्रारम्भ में, परमात्मा थे, और उनके सिवाय कुछ भी नहीं था। उसने सब कुछ बनाया। उसने प्रथम आदमी और औरत को बनाया और वे उनकी विशेष रचना थी। उसका उनके साथ गहरा सम्बन्ध था - वह उनके साथ चलता फिरता था, उनसे बातें करता था और उनकी देखभाल करता था। लेकिन यह सब बदल गया उस दिन जब आदमी और औरत ने परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन कर दिया। उन्होंने परमात्मा के साथ अपने सम्बन्ध को तोड़ दिया। इस अनाज्ञाकारिता ने उन्हें परमात्मा से अलग कर दिया।

आदमी और औरत की बहुत सी पीढ़ियाँ हुई जिस से पृथ्वी भर गयी। लेकिन जैसे की प्रथम आदमी और औरत परमात्मा की अनाज्ञाकारिता के कारण अलग हुए, वैसे ही उनकी संतानें भी परमात्मा से अलग रह गयी। लेकिन परमात्मा अपनी विशेष रचना को नहीं भूला। एक दिन उसने अब्राहम नामक एक व्यक्ति से कहा, “मैं तुम्हारे वंशजों को एक बड़ी मानवजाति बनाऊंगा और मैं तुमको आशीषित करूँगा। दुनिया के समस्त परिवार आपके और आपके संतानों के द्वारा आशीषित होंगे।” हालाँकि अब तक अब्राहम और उसकी पत्नी के कोई बच्चे नहीं हुए थे फिर भी अब्राहम ने परमात्मा की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखा। और इस वजह से परमात्मा ने अब्राहम के साथ दोबारा सम्बन्ध स्थापित किया।

परमात्मा ने अब्राहम के साथ जो प्रतिज्ञा की थी उसे निभाया। उन्होंने अब्राहम के वंशजों को एक बड़ी मानवजाति बना दिया। कभी तो वे उनके द्वारा की गयी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते थे, जैसे उनके पूर्वज अब्राहम ने किया, लेकिन अधिकतर वे अनाज्ञाकारी बने रहे, वैसे ही जैसा कि प्रथम आदमी और औरत ने किया। तब परमात्मा ने अपने विशेष संदेशवाहकों को भेजा कि वे इन लोगों को यह बता सके कि कैसे वे उसके साथ एक अच्छे सम्बन्ध में वापस आ सकते हैं। परमात्मा के एक संदेशवाहक का नाम यशायाह था। यशायाह ने अब्राहम के वंशजों को एक मुक्तिदाता के आने के बारे में बताया जिसकी वे आशा कर रहे थे। उसने कहा, “हम सभी परमात्मा और उसके मार्ग से भटक गए हैं। लेकिन परमात्मा कहते हैं, ‘मैं तुम्हारे पास एक मुक्तिदाता को भेजता हूँ, जो तुम्हारे सभी पापों का दंड अपने ऊपर ले लेगा। वह मर जायेगा लेकिन मैं उसे फिर से जीवन दूंगा। और मुक्तिदाता के कार्य की वजह से तुम फिर से मेरे साथ

सही सम्बन्ध में जुड़ पाओगे।'" उस समय से वे बड़ी आशा के साथ उस प्रतिज्ञा किए हुए मुक्तिदाता का इंतज़ार करने लगे, और वे इंतज़ार करते रहें....और इंतज़ार करते रहें....

परमात्मा ने अब्राहम की संतानों के साथ की गयी प्रतिज्ञा को निभाया। उसने उस प्रतिज्ञा किए गए मुक्तिदाता को भेजा। ये सनातन सद्गुरु यीशु थे, परमात्मा का अपना बेटा। प्रभु यीशु ने बहुत से आश्चर्य कर्म किए और बीमारों को स्वस्थ करके इस बात को साबित किया कि सचमुच वे ही मुक्तिदाता हैं।

सभी लोगों ने इस बात को नहीं जाना कि यीशु जी कौन थे। लेकिन बहुत से लोग उसे अनोखा सनातन गुरु मान कर उसके पीछे चलने लगे। उसने अपने भक्तों को शिक्षाएँ दी। एक दिन उसने उनसे कहा, "यदि तुम मेरे पीछे चलो, तो मैं तुम्हें अमृत जीवन दूंगा। तुम सभी मेरे हो। कोई भी तुम्हें मुझसे अलग नहीं कर सकता है। मैं और पिता परमात्मा एक ही हैं।"

जिन लोगों ने प्रभु यीशु पर भरोसा नहीं किया वे इस बात से काफ़ी क्रोधित हुए कि उसने इस बात का दावा किया कि वे और परमात्मा एक ही हैं। इसलिए उन्होंने सरकार से विनती की कि उसे मृत्युदंड दिया जाये। और ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि परमात्मा ने कहा था। यीशु जी को कोड़े से मारा और पीटा गया। और फिर उन्हें दर्दनाक मृत्यु की सजा दी गयी। लेकिन जैसा कि परमात्मा ने पहले ही कहा था, प्रभु यीशु फिर से जीवित हो गए!

इसके बाद सनातन गुरु यीशु ने अपने आप को अपने भक्तों के सामने प्रकट किया, और इस बात को स्पष्ट रीति से सिद्ध किया कि वे मृत्यु में से वापस आ गए हैं। चालीस दिन तक प्रभु यीशु ने अपने भक्तों को शिक्षाएँ दी। उसने उनसे कहा, "मैं तुम्हें जल्दी ही छोड़ दूंगा पर जब मैं तुम्हें छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास दिव्य आत्मा को भेजूंगा। और जब तुम उसकी दिव्य आत्मा को ग्रहण करोगे, तब तुम्हें शक्ति मिलेगी - ऐसी शक्ति कि तुम सारे लोगों को मेरे बारे में बता सको। सारे संसार में जाओ लोगों को मेरे बारे में बतलाओ। उन्हें वे सारी बातें मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें सिखायी है। और जब वे अपना पूरा विश्वास मुझ पर रखें, तब उन्हें मेरी दीक्षा दो। और जल संस्कार के द्वारा उन्हें मेरा भक्त बनाओ। उन्हें इस दीक्षा से यह सिखाओ कि उन्हें यह पता हो कि

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मुझे सौंप दिया है। इसका यह अर्थ होगा कि वे अपनी पाप से छुट गए हैं और मुझ पर विश्वास करने के द्वारा परमात्मा की ओर मुड़ गए हैं।"

और जब वह ये बातें कह ही रहा था कि यीशु आकाश की ओर ऊपर उठने लगे। जब शिष्य आकाश की और देख ही रहे थे दो ईश-दूत उन्हें नीचे आते दिखे, जिन्होंने उनसे पूछा, "क्यों तुम लोग आकाश की और देख रहे हो?" उन्होंने कहा, "सनातन गुरु यीशु एक दिन उसी प्रकार से वापस आयेंगे जैसा आपने उसे जाते हुए देखा।"

उस समय से प्रभु यीशु के भक्त बहुत ही आशा के साथ उसके वापस आने का इंतज़ार करने लगे और वे हर जगह जाकर लोगों को उसके बारे में बताने लगे। और जब लोगों ने यीशु जी पर विश्वास किया, उन्हें जल संस्कार दिया, जो यीशु भक्त होने का प्रतीक है। यह संस्कार इस बात को दर्शाता है कि वे अपनी अनाज्ञाकारिता से मुड़ गए हैं और सनातन गुरु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा परमात्मा के साथ फिर से सम्बन्ध बना चुके हैं।

ठीक ऐसा ही यीशु भक्त आज भी करते हैं। वे हर एक को उसके बारे में बताते हैं। वे एक साथ इकट्ठा होकर परमात्मा की आराधना करते हैं, प्रार्थना करते हैं, एक दूसरे की ज़रूरतों का ख्याल रखते हैं और अपने सनातन गुरु यीशु जी को और गहराई से जानने की कोशिश करते हैं।

और मैं भी उसका शिष्य होने के नाते यही करता हूँ। मैं दूसरे लोगों को यीशु जी के बारे में बताता हूँ कि उसने मेरे जीवन में कैसे परिवर्तन लाया।

सृष्टि की रचना

संसार के शुरुआत में कुछ भी नहीं था। केवल परमात्मा था। और परमात्मा ने सृष्टि की रचना का विचार किया। और उसने कहा कि उजाला हो जाए और उजाला हो गया। उसने आसमान बनाया, उसने पानी और भूमि बनाया। उसने आसमान में सूरज, चाँद और तारों को बनाया। और तब उसने धरती पर पेड़ पौधे बनाये, जीव जंतु बनाया जल में रहने वाले जीव और आसमान में उड़ने वाले पक्षी।

फिर उसने धरती से मिट्टी उठाकर एक आदमी को बनाया और उसने उस आदमी को अपने एक खूबसूरत बगीचे में रखा कि वह वहाँ रहे और उस बगीचे की देखभाल करे।

बगीचे से होकर एक नदी बहती थी जिस से बगीचे को पानी मिलता था। और बगीचे के बीचों-बीच दो पेड़ थें - एक जो जीवन का पेड़ था (जिसके फल को खाने से इंसान अमर हो सकता था) और दूसरा जो भले और बुरे के ज्ञान का पेड़ था। परमात्मा ने उस से कहा कि, "तुम इस पूरे बगीचे से कोई भी फल खा सकते हो। लेकिन एक पेड़ जो भले और बुरे का ज्ञान देता है उसका फल तुम नहीं खा सकते हो। अगर तुम उसे खाओगे तो तुम ज़रूर मर जाओगे।"

तब परमात्मा ने देखा कि मनुष्य का अकेले रहना ठीक नहीं। तब उसने आदमी को गहरी नींद में डाल कर उसके शरीर से एक पसली निकालकर औरत का निर्माण किया और परमात्मा उसे आदमी के पास ले गया। परमात्मा ने कहा फूलो फलो और सारी पृथ्वी में भर जाओ।

तब परमात्मा ने सब कुछ देखा और उसे बहुत ही अच्छा लगा। परमात्मा ने संसार को छः दिन में बनाया और सातवें दिन उसने विश्राम किया। और परमात्मा आदमी और औरत के साथ संगति में समय बिताते थे।

आत्मिक संसार की रचना और पाप का आगमन

परमात्मा ने सृष्टि की रचना करने से पहले ही ईश-दूतों को बनाया। उनको उन्होंने शक्ति दी और अधिकार दिया। और वे स्वर्ग में रहा करते थें। परमात्मा ने उनको अपनी स्तुति और आराधना के लिए बनाया था। लेकिन जिन ईश-दूतों को परमात्मा ने बनाया उनमें से एक था जो बाकी सब से सुन्दर था। और वह बहुत घमंडी हो गया। उसने सोचा कि, "मैं परमात्मा के समान हो जाऊँ" और उसने परमात्मा का विरोध किया। उसने ईश-लोक के एक तिहाई ईश-दूतों को भी अपने साथ कर लिया। उस कारण से परमात्मा ने उनको ईश-लोक से निकाल दिया और वे सब ईश-दूत जो

परमात्मा के विरोध में थे उनको दुष्ट आत्मा कहा जाता है। और जिन्होंने उन दुष्ट आत्माओं की अगवाई की उसका नाम है शैतान।

और पृथ्वी पर जितने जानवरों को परमात्मा ने बनाया उनमें से सब से चालाक साँप था। और शैतान साँप के रूप में आ गया। साँप औरत के पास आया और पूछा कि "क्या यह सच है कि परमात्मा ने तुम्हें इस बगीचे के हर एक पेड़ के फल को खाने के लिए मना किया है?" और औरत ने कहा "नहीं यह तो सच नहीं है। उसने बस कहा है कि हम एक पेड़ के फल को नहीं खा सकते हैं जो भले और बुरे का ज्ञान देता है। अगर हम उसे खाएंगे तो हम जरूर मर जाएंगे।" साँप ने कहा "नहीं यह सच नहीं है। अगर तुम उसे खाओगी तो तुम परमात्मा के समान हो जाओगी। इस कारण वह नहीं चाहते हैं कि तुम उसे खाओ।" तो औरत ने उस पेड़ को देखा जिस का फल बुद्धि देने वाला दिख रहा था। उस फल को लिया, और उसने खाया और उसने अपने पति को भी दिया। जैसे ही उन्होंने उस फल को खाएँ उन्हें ज्ञान हुआ, उन्हें शर्म आई और उनकी दृष्टि एकदम बदल गयी। उन्हें लगा कि उन्होंने कपड़े नहीं पहने हैं तो उन्होंने पेड़ की पत्तियों को तोड़कर अपने कपड़े बनाये और उसको पहन लिया।

जब परमात्मा उनसे मिलने बगीचे में आया तब उसने उन्हें आवाज दी, "कहा हो?" तो जो आदमी था उसने कहा कि "हम डरे हैं! हम छिपे हुए हैं क्योंकि हमें शर्म आ रही है और हम नंगे है।" तो परमात्मा ने कहा कि "तुम्हें किसने बताया कि तुम लोग नंगे हो? क्या तुमने उस पेड़ का फल खाया जिसे मैंने मना किया था?" तो आदमी कहता है कि "यह औरत जो आपने मुझे दी है उसने मुझे यह पेड़ के फल खाने को दिया है। तो परमात्मा कहता है औरत से कि "यह तुमने क्या किया?" औरत कहती है "नहीं, नहीं! इस साँप ने मुझे आकर भरमा दिया। और इस कारण मैंने यह फल खाया।"

तो परमात्मा साँप को कहते हैं कि "तुम सभी जानवरों में से इस पाप के कारण श्रापित हो और तुम अपने पेट के बल चलोगे और मिट्टी चाटने को मजबूर हो जाओगे और औरत और तुम्हारी पीढ़ियों में हमेशा बैर होगा। तुम उस के पैर को डसोगे और वह तुम्हारे सर को कुचल देंगे।

फिर वह औरत को कहते हैं कि, “तुमने जो किया गलत किया इसलिये तुम्हारे गर्भावस्था की पीड़ा को बढ़ाऊंगा।”

फिर वह आदमी को कहता है कि, “तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी और इस कारण धरती तुम्हारे लिए श्रापित होगी। तुम अब इस धरती से अनाज उपजा के खाओगे। यह धरती कठोर हो जाएगी और तुम अपने पसीने की कमाई खाया करोगे।”

और तब परमात्मा सोचते हैं कि, “दुनिया के लोग अब सब कुछ जानते हैं, ‘भला और बुरा’। क्या होगा अगर वे जीवन के पेड़ के फल को खाए और अमर हो जाएँ?” इसलिए परमात्मा उनको बगीचे से निकाल देते हैं और उनको जीवन के पेड़ के पास दोबारा आने का रास्ता रोक लेते हैं।

अब्राहम

प्रथम आदमी और औरत की अनाज्ञाकारिता ने उन्हें परमात्मा से अलग किया। लेकिन परमात्मा अपनी विशेष रचना को नहीं भूला। परमात्मा मनुष्य से फिर से रिश्ता जोड़ना चाहते थे। बहुत साल बीते। तब परमात्मा ने एक आदमी को चुना जिस से वह अपने लिए एक नयी मानवजाति को उत्पन्न करने वाले थे जो उनकी होगी। इसके लिए उन्होंने अब्राहम नामक एक व्यक्ति को चुना।

परमात्मा ने अब्राहम से कहा “अपनी जन्मभूमि और अपने रिश्तेदारों को छोड़ो और उस देश को जाओ जो मैं तुमको दिखाऊंगा। मैं तुम्हारे वंशजों को एक बड़ी मानवजाति बनाऊंगा और मैं तुमको आशीषित करूँगा। तुम अन्य लोगों के लिए एक आशीष का कारण होगे। दुनिया के समस्त परिवार तुम्हारे और तुम्हारे संतानों के द्वारा आशीषित होंगे।” तो जैसे परमात्मा ने अब्राहम को आज्ञा दी वैसे ही अब्राहम वहाँ से निकला। अब्राहम ७५ साल के थे जब वो अपनी जन्म भूमि को छोड़ के चले गये। वह अपनी पत्नी सारा और अपने धन-दौलत, अपने सारे जानवरों और अपने घराने को

लेकर उस देश की ओर निकले जो परमात्मा उसको दिखाने वाले थे। जब वे वहाँ पर पहुँचे तब अब्राहम उस देश में से गुज़रा और जब वह एक जगह रुक गया तो उन्होंने वहाँ पर एक विशाल पेड़ के बगल में अपने तम्बू को लगाया।

फिर परमात्मा दृश्यमान हुए और अब्राहम से कहा “मैं यह भूमि तुम्हारे वंशजों को दे दूंगा।” और अब्राहम ने परमात्मा की आराधना की।

कुछ समय बाद परमात्मा अब्राहम को दिखाई दिए और बात की और कहा “मत डरो... मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और तुम एक महान पुरस्कार को पाओगे।”

लेकिन अब्राहम ने उत्तर दिया “हे परमात्मा, आपके सारे आशीर्वाद किस काम के हैं जब मेरा अपना बेटा ही नहीं है! क्योंकि आपने मुझे कोई बच्चा नहीं दिया। मेरे घराने का एक दास मेरी सारी संपत्ति का वारिस होगा। आपने मुझे कोई खुद की संतान नहीं दी, तो मेरा दास मेरा वारिस होगा।”

तब परमात्मा ने उसे कहा “नहीं, तुम्हारा दास तुम्हारा वारिस नहीं होगा, क्योंकि वारिस तुम्हारा अपना बेटा होगा। तब परमात्मा अब्राहम को आसमान के नीचे तम्बू के बाहर ले गये। और उन्होंने अब्राहम से कहा “आकाश में देखो - सभी तारों को गिन लो अगर गिन सकते हो। तुम्हारे संतान उतने ही होंगे!”

अब्राहम ने परमात्मा की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखा। और इस वजह से परमात्मा ने अब्राहम के साथ दोबारा सम्बन्ध स्थापित किया।

राजा दाविद

परमात्मा ने अब्राहम के साथ जो वादा किया उसको पूरा किया। उनके वंशजों से एक बड़ी जाति बनी। परमात्मा अपने लोगों के लिए बहुत अगुओं को उठाया। उनमें से एक का नाम दाविद था। और यह वह कथा है जो हमें बताती है कि वह राजा कैसे बना।

एक दिन परमात्मा ने अपने ईश-प्रवक्ता शमूएल से कहा कि "बैतलेहम नगर को जाओ। उस व्यक्ति के पास जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा क्योंकि मैंने उसके एक बेटे को राजा बनाने के लिए चुना हैं।"

जब वह वहाँ पहुँचे ईश-प्रवक्ता ने पहले बेटे को देखा और यह सोचा "निश्चित ही इसे ही परमात्मा राजा बनाना चाहते हैं।" लेकिन परमात्मा ने उसे कहा कि "मैंने इसे अस्वीकार किया। मैं तुम्हारी तरह निर्णय नहीं लेता हूँ। लोग बाहरी परिवेश देख के न्याय करते हैं। लेकिन परमात्मा व्यक्ति के मन और नीयत को देखते हैं।"

ईश-प्रवक्ता के सामने सभी सात बेटे उपस्थित किए गए। लेकिन ईश-प्रवक्ता ने कहा "इनमें से किसी को भी परमात्मा ने नहीं चुना।" तब उसने पूछा क्या तुम्हारे इतने ही बेटे हैं?

पिता ने उत्तर दिया "एक सबसे छोटा बेटा भी है, लेकिन वह भेड़ों की रखवाली के लिए खेतों में है।" जब उस बेटे को ले आया गया परमात्मा ने ईश-प्रवक्ता से कहा, "यह वही है जिसे मैंने चुना है।"

फिर दाविद अपने भाइयों के बीच में खड़ा हुआ और ईश-प्रवक्ता ने तेल से उसके सिर को अभिषिक्त किया। और परमात्मा की आत्मा दाविद पे आयी।

कई वर्ष बीत गए और दाविद नया राजा बन गया। परमात्मा उसके राज्य में शान्ति लाये। एक दिन परमात्मा ने अपने एक दूसरे ईश-प्रवक्ता नातन को दाविद से यह कहने को भेजा कि "जब तुम एक चरवाहे ही थे मैंने तुम्हें इन लोगों के मार्ग दर्शन के लिए चुन लिया था। अब मैं तुम्हें इस पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँगा। और मैं तुमसे राजवंश शुरू करूँगा। उनमें से एक राज्य करेगा और अगर उसने अधर्म किया तो मैं दूसरे देशों का इस्तेमाल उसे दंड देने के लिए करूँगा। लेकिन मेरा प्रेम अनंत है और तुम्हारा राज्य सदा के लिए होगा।"

जब दाविद ने इस सन्देश को सुना उसने परमात्मा का गुणगान किया और उसने परमात्मा पर विश्वास किया यह कहते हुए कि "परमात्मा अपने प्रतिज्ञाओं को पूरा कीजिये क्योंकि आप मेरे ईश्वर है और आप का वचन सत्य है।"

दाविद राजा और बतशेबा

एक समय कि बात है बसंत ऋतु में जब राजा लोग युद्ध करने जाते हैं दाविद ने अपनी सारी सेना को युद्ध के लिए भेज दिया लेकिन खुद महल में ही रहे।

एक दिन शाम को दाविद अपने छत पर टहल रहे थे। और जब वे अपने नगर को देख रहे थे तो उन्हें एक बड़ी ही सुन्दर औरत नहाते हुए दिखाई दी। उन्होंने अपने सेवक को भेजा कि वह पता करे कि वह कौन है। और उसने दाविद को बताया कि "उसका नाम बतशेबा है। और वह आपके एक भरोसेमंद सैनिक की पत्नी है।" तब दाविद ने अपने सेवक को उसे बुलाने के लिए भेजा। और जब वह महल में आयी तो वह उसके साथ सोया। और फिर वह अपने घर को चली गयी। कुछ समय बाद, जब बतशेबा को पता चला कि वह गर्भवती है उसने दाविद को सन्देश भेजा और इस में कोई संदेह नहीं था कि यह बच्चा उसी का है।

तब दाविद ने अपने सेनापति को यह आदेश दिया कि वह बतशेबा के पति को घर भेज दे। जब वह आया, दाविद ने उससे पूछा "युद्ध कैसा चल रहा है?" उसके बाद दाविद ने उससे कहा कि वह

घर जाए और आराम करे। लेकिन वह घर को नहीं गया। वह पूरी रात महल के द्वार पर राजा के सेवकों के साथ रहा। जब दाविद ने यह सुना कि उसने क्या किया है तब उसने उससे पूछा कि "इतने दिन घर से दूर रहने पर भी तुम पिछली रात घर क्यों नहीं गए?" उसने उत्तर दिया कि "हमारी सेना मैदानों में सो रही है तो मैं कैसे घर जाकर आराम कर सकता हूँ?" तब दाविद ने उससे कहा कि वह एक और रात रुके और उसने उसे रात के भोजन पर निमंत्रण दिया। और उसे शराब पिलाकर नशे में कर दिया। लेकिन फिर भी वह इस सैनिक को उसके घर बतशेबा के पास नहीं भेज पाया। उस रात भी वह महल के द्वार पे सो गया।

तब अगले दिन दाविद ने एक पत्री लिख कर बतशेबा के पति के द्वारा सेनापति को पहुँचाया। पत्र में यह आदेश था कि "जब युद्ध में खतरा आये तो इस सैनिक को आगे कर दिया जाए, और सब पीछे हो जाएँ जिस से यह मार दिया जाए।" तब सेनापति ने ऐसे ही किया। और बतशेबा का पति कुछ अन्य सैनिकों के साथ मारा गया।

उसके बाद सेनापति ने युद्ध का सन्देश दाविद को भेजवाया और कहा कि "बतशेबा का पति भी युद्ध में अन्य सैनिकों के साथ मारा गया।" तब दाविद ने कहा कि "सेनापति निराश न हो, लोग युद्ध में तो मारे जाते हैं, हमें अगली बार और मेहनत से युद्ध करना है।"

जब बतशेबा ने अपने पति की मृत्यु की खबर सुनी तो वह रोयी और उसने विलाप किया। कुछ समय बाद राजा दाविद उसे अपनी पत्नी बना कर अपने महल में ले आया। और फिर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। लेकिन जो कुछ राजा दाविद ने किया उस से परमात्मा बहुत ही दुःखी हुए।

नातन की कहानी

क्योंकि दाविद के इस पूरे कार्य से परमात्मा दुःखी थे परमात्मा ने अपने ईश-प्रवक्ता नातन को दाविद के पास भेजा और उसने दाविद को यह कहानी सुनाई –

“किसी नगर में दो आदमी रहते थे एक जो धनवान था और उसके पास बहुत सी भेड़े थी। और दूसरा आदमी जो कि ग़रीब था उसके पास कुछ भी नहीं सिर्फ एक मेमना था। जिसे उसने पाला पोषा और अपने बच्चे के समान बड़ा किया। एक दिन धनवान के यहाँ पे एक मेहमान आया। और उसने अपनी भेड़ों में से किसी को न मारा परन्तु उस गरीब आदमी के मेमने को ले लिया और उसे मार दिया और मेहमान को परोसा।”

दाविद गुस्से से आगबबूला हो गया और उसने कहा “जिस भी व्यक्ति ने यह किया उसको मृत्यु की सज़ा मिलनी चाहिए। उसे कम से कम चार मेमने उस गरीब आदमी को लौटाने चाहिए।”

तब नातन दाविद से कहा कि “वह आदमी तुम ही हो! प्रभु ने कहा कि मैंने तुम्हें राजा अभिषिक्त किया। तुम्हें यह सारा राज्य दिया। और अगर यह सब कुछ भी पर्याप्त नहीं था तो मैं तुम्हें और भी बहुत देता। तो क्यों तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया और यह जघन्य अधर्म किया? तुमने एक आदमी को मारा और उसकी पत्नी को ले लिया। क्योंकि तुमने परमात्मा के विरोध में पाप किया इस वक्त से हिंसा तुम्हारे परिवार में हमेशा बनी रहेगी। जो तुमने छिप कर किया वह अब तुम पर खुले में होगा।”

तब दाविद ने नातन के सामने अपनी गलती स्वीकार की और पश्चाताप किया। “मैंने परमात्मा के विरुद्ध पाप किया है।” नातन ने कहा “हाँ, परमात्मा ने तुम्हें माफ कर दिया है और वह तुम्हें नहीं मारेगा लेकिन जो कुछ तुमने किया उसकी वजह से तुम्हारा बेटा मर जाएगा।”

उसके बाद नातन अपने घर को चला गया। उसके बाद बतशेबा का बच्चा काफी बीमार हो गया। दाविद ने परमात्मा से बहुत विनती की लेकिन सात दिनों बाद बच्चा मर गया।

दाविद ने बतशेबा को तसल्ली दी और कुछ समय बाद बतशेबा फिर गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और परमात्मा ने उसे प्रेम किया।

प्रतिज्ञा

अब्राहम के बाद उसके वंश में जितने भी राजा हुए उन्होंने परमात्मा की आज्ञाओं को नहीं माना बल्कि मनुष्यों का अनुसरण किया। परमात्मा ने उनको उनकी अनाज्ञाकारिता की सज़ा देने के लिए उनकी मदद तब नहीं की जब उनके पड़ोसी देशों ने उन पर चढ़ाई की। उनके वंश के लोग अलग-अलग हो गए थे लेकिन परमात्मा ने अपने लोगों को नहीं भूला। उन्होंने आशा का सन्देश देने के लिए एक ईश-प्रवक्ता को भेजा जिसका नाम यशायाह था। और उसने उन्हें बताया कि –

“परमात्मा हमें एक मुक्तिदाता भेजने वाला हैं। कुछ उससे घृणा करेंगे, कुछ उससे बुरा बर्ताव करेंगे। वह दुःख उठाएगा, वह हमारे बोझ और पीड़ा को ले लेगा, वह हमारी शान्ति के लिए कोड़े से मारा और पीटा जाएगा । हम सब भेड़ के समान है। हम परमात्मा का रास्ता छोड़ के खुद अपने रास्ते पे चल रहे हैं। हमने पाप किया हैं और परमात्मा की आज्ञा नहीं मानी लेकिन परमात्मा ने हमारे सारे पापों को इस मुक्तिदाता को दे दिया है।”

वह एक प्रकार से एक मेमना की तरह बलिदान के लिए लाया गया है। वह कुछ भी नहीं कहेगा। और वह हमारे अधर्मों के लिए दंड भोगेगा और मारा जाएगा। लेकिन, एक अद्भुत बात यह है कि वह फिर से जीवन को देखेगा। और इस कारण से कई लोग परमात्मा के साथ अपने सम्बन्ध को फिरसे स्थापित कर पाएंगे।

यह सन्देश यशायाह ने लोगों को दिया और इस के बाद से लोग बड़ी आशा के साथ इस मुक्तिदाता के आने की प्रतिज्ञा के पूरी होने की प्रतीक्षा करने लगे।

मुक्तिदाता यीशु का जन्म

परमात्मा ने अपने एक ईशदूत को एक कुँवारी के पास भेजा जिसका नाम मरियम था। वह उससे कहता है कि, “आनंद और जय तुम्हारी हो। मैं तुम्हारे लिये एक शुभ संदेश लाया हूँ।” मरियम उसे देखकर बहुत डर जाती है। तो ईशदूत कहता है कि, “डरो मत! तुम गर्भवती होगी और तुम एक पुत्र को जन्म दोगी और उसका नाम यीशु रखोगी।” तब मरियम कहती है, “यह कैसे सम्भव है? मैं तो अभी कुँवारी हूँ।” तब ईशदूत कहता है कि ,“पावन आत्मा की छाया तुम पर आएगी जिसके द्वारा तुम गर्भवती होगी।” तब मरियम कहती है कि, “मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा परमात्मा चाहे वैसा हो।”

मरियम की सगाई जिससे तय हो गई थी। उसे यह बात पता चलती है कि मरियम गर्भवती है। चूंकि वह एक भला मनुष्य था और वह उसे बदनाम नहीं करना चाहता था इसलिए वह चुपचाप अपनी मंगनी तोड़ना चाहता था। जब वो सोया रहता है तो उसे एक सपना आता है और सपने में ईशदूत उसे कहता है कि, “मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर क्योंकि जो कुछ भी उसके साथ हो रहा है वह परमात्मा की इच्छा के अनुसार ही हो रहा है। जिस पुत्र को वह जन्म देगी उसका नाम तुम यीशु रखना और वह परमात्मा की संतान होगी और वह लोगों को उनके पापों से मुक्त करेगा।”

और फिर वह वही करता है और मरियम को अपनी पत्नी के रूप में अपने घर में ले आता है। लेकिन जबतक मरियम अपने पुत्र को जन्म नही दे देती वह उसके पास नहीं सोता। और कुछ महीनों के बाद मरियम को एक बच्चा पैदा होता है।

उसी शहर के राजा के पास दूर देश से कुछ विद्वान आते हैं और कहते हैं कि, “क्या जिस राजा का जन्म होना था वह हो चुका है?” [यह वे उस मुक्तिदाता के बारे में पूछ रहे थे।] यह सुनते ही राजा बहुत घबरा जाता है। तब राजा अपने ज्योतिषियों को बुलवाता है और पूछता है कि, “क्या किसी राजा का जन्म हो चुका है?” तो ज्योतिषी राजा को इस बात के बारे में बताते है। तब राजा बाहर से आये विद्वानों के पास जाता है और कहता है कि, “आप जायें और मुक्तिदाता का दर्शन करके हमें भी बतायें ताकि मैं भी जाकर उनका दर्शन कर सकूँ।”

और तब विद्वान मुक्तिदाता की खोज में उस तारे के पीछे तब तक चलते रहें जबतक वह तारा एक जगह रुक नहीं गया। वह वही रुकता है जहाँ मुक्तिदाता थे। और तब वे देखते हैं कि यीशुजी वहाँ पर है। देखते ही वे उन्हें साष्टांग दण्डवत करते हैं और उन्हें बहुमूल्य उपहार देते हैं। जैसे सोना, लोबान और सुगन्धित द्रव्य। फिर वे वहाँ से चले जाते हैं। लेकिन उन्हें सपना आता है कि राजा इस बच्चे को मरवा डालना चाहता है। तो वे दूसरे रास्ते से अपने देश को निकल जाते हैं।

और जो यीशुजी के पिता है उनको भी सपना आता है कि राजा यीशु को मरवा डालना चाहता है। इस कारण से वे उस शहर को छोड़कर दूसरे देश को चले जाते है। जब राजा को यह बात पता चलता है कि विद्वान उनके पास न आकर वापस चले गये तो वह बहुत क्रोधित होता है और आज्ञा देता है कि जितने भी दो वर्ष के बालक हैं उन सब को मार दिया जाए।

कुछ समय बीतने के बाद राजा की मृत्यु हो जाती है। और उसके बाद यीशुजी के पिता को एक बार फिर से सपना आता है। उससे ईशदूत कहता है कि, “जो इस बालक को मरवा डालना चाहता था वह मर चूका है। अब तुम उठो और बच्चे और उसकी माता को लेकर दूसरे देश को चले जाओ।” और वे ऐसा ही करते हैं।

यीशुजी का जल संस्कार (गुरु दीक्षा)

परमात्मा ने गुरु यीशु के समय में अपने एक ईश-प्रवक्ता को उनसे पहले भेजा कि वह गुरु यीशु के लिए मार्ग तैयार करें ताकि लोग इस प्रतिज्ञा किए हुए मुक्तिदाता यीशु को जाने और ग्रहण करें। कुछ समय बाद परमात्मा का सन्देश दीक्षा गुरु योहन नामक व्यक्ति के पास आया जो बाहर जंगलों में रहा करता था।

तब योहन एक जगह से दूसरी जगह जाया करता था और लोगों को बताता कि उन्हें अपने पापों का अंगीकार कर परमात्मा से क्षमा पाने के लिए जल संस्कार लेना चाहिए।

कुछ धार्मिक गुरु योहन को सुनने के लिए आये और योहन ने उनसे कहा “साँप के बच्चों! तुम्हें किसने बताया कि तुम प्रभु के आनेवाले क्रोध से भागो? अपने आचरण के द्वारा सिद्ध करो! परमात्मा की और मुड़ो। सिर्फ एक दूसरे से यह न कहो कि ‘हमारे पूर्वज अब्राहम से है, इसलिए हम बच जाएंगे।’ परमात्मा किसी भी चीज़ को बदल सकते हैं, वह चाहे तो इन पत्थरों को भी अब्राहम के वंश बना सकते हैं।”

तब भीड़ ने उससे पूछा कि “हम क्या करें?” योहन ने उत्तर दिया कि “अगर तुम्हारे पास दो कुर्ते हो तो एक किसी ग़रीब को दे दो। अगर तुम्हारे पास भोजन हो तो किसी भूखे के साथ बाँट दो।”

यहाँ तक कि एक भ्रष्ट कर वसूलने वाला भी गुरु दीक्षा लेने के लिए आया और उसने पूछा कि “गुरु हम क्या करें?” उसने उत्तर दिया “अपनी ईमानदारी दिखाओ। जितना कर सरकार ने नियुक्त किया उतना ही लेना।”

कुछ सिपाहियों ने उस से पूछा “हम क्या करें?” उसने कहा “किसी को न सताना और न झूठा दोष लगाना और अपनी आय से संतुष्ट रहो।”

सभी लोग प्रतिज्ञा किए गए मुक्तिदाता का इंतज़ार कर रहे थे कि वह जल्दी आने वाला है। और लोग जानना चाहते थे कही वह योहन ही तो नहीं। योहन ने इस बात का उत्तर यह कह कर दिया “मैं तो तुम्हें पानी से संस्कार देता हूँ। परन्तु जो आनेवाला है वह मुझ से भी शक्तिशाली है। मैं तो उसके जूते के बंधन खोलने योग्य भी नहीं। वह तुम्हें दिव्य आत्मा से दीक्षा देगा।”

एक दिन जब भीड़ जल संस्कार ले रही थी प्रभु यीशु स्वयं योहन से जल संस्कार लेने के लिए वहाँ आया हालाँकि प्रभु यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया।

लेकिन योहन ने प्रभु यीशु को यह कहकर मना करने की कोशिश की कि “आप को मुझसे नहीं बल्कि मुझे आप से जल संस्कार लेने की ज़रूरत है। लेकिन आप मेरे पास क्यों आये हैं?”

तब प्रभु यीशु ने कहा कि “यह होना आवश्यक है, क्योंकि इसे परमात्मा ने सुनिश्चित किया है।” तब योहन ने उन्हें जल संस्कार दिया।

उसके बाद जब वे प्रार्थना कर ही रहे थे तब स्वर्ग खुल गया और परमात्मा की आत्मा कबूतर के रूप में उस पर उतरी और स्वर्ग से एक आवाज आयी, “तू मेरा प्रिय पुत्र है और मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ।”

दुष्ट आत्मा ग्रसित आदमी

एक दिन सद्गुरु यीशु अपने शिष्यों के साथ झील के उस पार जाते हैं। जैसे वे नाव से उतरे तभी एक पागल आदमी उनके पास आता है। यह पागल व्यक्ति मरघट में रहता था, नंगा घूमता था और चिल्लाया करता था। वह अपने आप को पत्थरों से घायल करता था और लोग उसे सीकड़ों से बांधने की कोशिश करते थे लेकिन वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता था।

वह गुरु यीशु के पास आता है और कहता है कि “हे परम प्रधान परमात्मा के पुत्र आप का मुझ से क्या काम हैं? आप मुझे परेशान न करें।”

तब गुरु यीशु कहते हैं कि, “तुम्हारा नाम क्या है?” और वह उनसे कहता है कि, “हमारा नाम सेना है क्योंकि हम बहुत से हैं।” (क्योंकि उस आदमी के अन्दर बहुत सारी दुष्ट आत्माएँ थी।) और वह गुरु यीशु से विनती करता है कि वह उसको उस प्रदेश से न निकालें।

पास ही एक जानवरों का झुंड चर रहा था। और वे दुष्ट आत्माएँ गुरु यीशु से कहती हैं कि, “हमें उन जानवरों में भेज दें।” और गुरु यीशु आज्ञा देते हैं कि वे आत्माएँ उस आदमी से निकलकर जानवरों में चली जाएँ और वे सब की सब तुरंत जानवरों में चली गयीं।

और चरवाहे पास में खड़े होकर सब कुछ देख रहे थें। इन सब को देखने के बाद वे जाकर गाँव के सारे लोगों को लेकर आते हैं। और जब वे आते हैं वे देखते हैं कि यह जो पागल आदमी था वह बड़े ही सचेत और शान्ति से सद्गुरु यीशु के चरणों में बैठा है। तब गाँव के लोगों ने गुरु यीशु से विनती की कि, वे उस जगह को छोड़ के चले जाएँ। जब गुरु यीशु और उनके शिष्य जाने के लिए नाव पर चढ़ रहे थे वह आदमी जो दुष्ट आत्माओं से परेशान था उनके पास आकर कहने लगता है कि, “हे गुरु यीशु मुझे भी अपने साथ ले चलिए।” लेकिन गुरु यीशु ने उसे अपने साथ आने की अनुमति नहीं दी। और उस से यह कहा कि, “अपने घर जाओ, अपने लोगों के बीच में जाओ और जो कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया वह लोगों को बताओ।” फिर वह आदमी वहाँ से अपने घर जाता है और अपने शहर और आस पास के दस शहरों में जाकर सभी लोगों को बताता है कि सद्गुरु यीशु ने उसके लिए क्या-क्या किया और सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये।

पूर्ण विश्वास

प्रभु यीशु लोगों को अपनी शिक्षा दिया करते थे। कुछ लोगों ने उनपर विश्वास किया लेकिन कुछ लोगों ने नहीं किया। एक दिन प्रभु यीशु उन लोगों को बता रहे थे कि वह ही प्रतिज्ञा किए हुए मुक्तिदाता है।

“मैं अच्छा चरवाहा हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ। जो लोग मुझ पर विश्वास करते हैं वे मुझे जानते है। परमात्मा मुझ से प्रेम करते हैं क्योंकि मैं अपनी इच्छा से अपना जीवन अपने भेड़ों के लिए दे देता हूँ। कोई मेरा जीवन ले नहीं सकता बल्कि मैं स्वयं दे रहा हूँ।”

फिर से प्रभु यीशु एक धार्मिक पर्व के अवसर पर येरूशलेम में थे। वह आराधना स्थल पर चल रहे थे। लोग जो उनके आसपास थे उन्होंने पूछा “आप कब तक हमारे मन में जिज्ञासा बनाए रखेंगे? यदि आप प्रतिज्ञा किए हुए मुक्तिदाता हैं तो हमें स्पष्ट बताएँ।”

प्रभु यीशु ने उत्तर दिया “मैंने पहले ही तुम्हें बताया लेकिन तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो। मेरी भेड़ मुझे सुनती हैं, मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे चलती हैं।”

“मैं उन्हें अनंत जीवन दूंगा और उनका कभी अंत नहीं होगा। उन्हें मुझ से कोई छीन नहीं सकता क्योंकि मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है और वह सबसे शक्तिशाली हैं। मैं और पिता परमात्मा एक ही हैं।”

लोगों ने उसे मारने के लिए पत्थर उठाये यह कहकर कि “तुम सिर्फ एक मनुष्य हो और ईश्वर होने का दावा कर रहे हो!”

प्रभु यीशु ने उत्तर दिया “तुम ऐसे क्यों कह रहे हो कि मैंने परमात्मा का अपमान किया है जब मैं कहता हूँ कि मैं परमात्मा का पुत्र हूँ? लेकिन मैं अपने पिता का कार्य करूँगा, मैंने जो चमत्कार किए वे इसे सिद्ध करते है चाहे आप उनपर विश्वास करें या न करें।”

एक बार फिर उन्होंने उसे बंदी बनाने की कोशिश की लेकिन प्रभु यीशु उनसे बच कर निकल गए।

दृष्टि

एक दिन कुछ माता-पिता अपने बच्चों को प्रभु यीशु के पास लाये कि वह उन्हें छूकर आशीर्वाद दें, लेकिन प्रभु यीशु के कुछ शिष्यों ने उनसे कहा कि वे प्रभु यीशु को परेशान न करें। फिर प्रभु यीशु ने बच्चों को बुलाकर अपने शिष्यों से कहा "बच्चों को मेरे पास आने दो उन्हें मत रोको। कोई भी अगर बच्चों के समान विश्वास न रखें तो परमात्मा के साथ रिश्ते का अनुभव नहीं कर पाएँगे।

बारह शिष्यों को अपने पास इकट्ठा करके प्रभु यीशु ने कहा "जैसे कि तुम जानते हो हम येरूशलेम जा रहे हैं और जब हम वहाँ पहुंचेंगे, तो जितने भी ईश-प्रवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ जो मेरे बारे में थीं सच होगी। मैं सैनिकों के हाथों में सौंप दिया जाऊंगा और मुझे सताया जाएगा, शर्मिंदा किया जाएगा और मुझ पर थूका जाएगा। वे मुझे कोड़े लगाएंगे और मार डालेंगे, लेकिन तीसरे दिन मैं फिर से जी उठूँगा।"

लेकिन प्रभु यीशु की इस बात को शिष्य नहीं समझ पाए।

जब वे पास के ही शहर में थे तब एक अंधा सड़क के किनारे बैठा था। जब उसने अपने पास से गुज़र रही भीड़ के शोर को सुना तो उसने पूछा कि "क्या हो रहा है?" तब किसी ने कहा कि "यीशु वहाँ से गुज़र रहे हैं।" तब वह बड़ी जोर से चिल्लाने लगा "यीशु! दाविद के वंशज, मुझ पर दया कर।" भीड़ जो प्रभु यीशु के आगे थी उसने इस आदमी को चुप कराने की कोशिश की। लेकिन यह और तेज़ चिल्लाने लगा। "दाविद के वंशज मुझ पर दया कर!"

जब प्रभु यीशु ने सुना तो वे रुक गए और उन्होंने आज्ञा दी कि उस आदमी को उनके पास लाया जाए। प्रभु यीशु ने उस से पूछा कि "तुम क्या चाहते हो जो मैं तुम्हारे लिए करूँ?"

अंधे ने उत्तर दिया, "मैं देखना चाहता हूँ!"

तब प्रभु यीशु ने कहा, “ठीक है। तुम देख सकते हो। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें ठीक किया।” और तुरंत ही वह आदमी देखने लगा। उसने प्रभु यीशु की प्रशंसा की और प्रभु यीशु के पीछे चलने लगा। जितनों ने यह देखा वे भी परमात्मा की प्रशंसा करने लगे।

विजय प्रवेश

वहाँ से प्रभु यीशु और उनके कुछ शिष्य अपनी यात्रा में येरूशलेम की ओर गए।

जब वे येरूशलेम के पास पहुंचे, प्रभु यीशु ने अपने दो प्रिय शिष्यों को आगे भेजा। प्रभु यीशु ने उनसे कहा “उस गाँव में जाओ और जैसे ही तुम वहाँ पहुंचोगे तुम्हें एक गधा दिखाई देगा जिस पर किसी ने सवारी नहीं की। उसे खोलकर यहाँ ले आना। यदि कोई तुम से पूछें कि ‘तुम उसे क्यों ले जा रहे हो’ तो यह कहना कि ‘गुरु जी को इस की आवश्यकता है।’”

तो वे गए और एक गधे को देखा जैसा प्रभु यीशु ने कहा था। और ठीक उसी प्रकार जब वे उस गधे को खोल रहे थे तो मालिक ने उनसे पूछा कि “तुम गधे को क्यों ले जा रहे हो।” और एक शिष्य ने सरल उत्तर दिया “गुरु जी को इसकी आवश्यकता है।” तो वे उस गधे को प्रभु यीशु के पास लाये और उस गधे की पीठ पर अपने कुर्ते को बिछा दिया ताकि प्रभु उस पर सवारी करें।

जब प्रभु यीशु उस गधे पर बैठकर चलने लगे तो वहाँ एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी और उनके आगे-आगे रास्ते पर कपड़े बिछाने लगी। और उनके भक्तजन चिल्लाने लगे, ख़ुशी के गीत गाने लगे और परमात्मा की प्रशंसा यह कहते हुए करने लगे कि, “वह मुक्तिदाता आशीषित हो जो परमात्मा के नाम पर आया है! परमात्मा की प्रशंसा हो!”

लेकिन कुछ धार्मिक गुरु भीड़ में से कह रहे थे कि “गुरु जी अपने भक्तों को यह सब कहने से रोके।”

उसने उत्तर दिया “यदि ये चुप हो जाएंगे तो रास्ते के पत्थर चिल्ला उठेंगे!”

लेकिन जैसे ही प्रभु यीशु येरूशलेम के करीब पहुंचे और शहर को देखा वे रोने लगे और कहा, “काश कि आज तुम सारे लोग शान्ति के मार्ग को समझ पाते लेकिन अब बहुत देर हो गयी। शान्ति तुम से छिपी है और तुम्हारे शत्रु तुम्हें नष्ट कर देंगे क्योंकि परमात्मा के आने के समय को तुमने नहीं पहचाना।”

उसके बाद वह हर दिन आराधना स्थलों पर शिक्षा देता लेकिन धर्म गुरुओं ने उसको मारने की योजना बनानी शुरू कर दी। पर वह कुछ कर नहीं पा रहे थे क्योंकि सभी लोग प्रभु यीशु की हर एक बात पर विश्वास करते थे।

प्रभु भोज - महा प्रसाद

सद्गुरु यीशु और उनके करीबी शिष्य येरूशलेम में पहुंचे। उस शहर में बहुत से लोग थे क्योंकि यह त्यौहार का समय था।

तब यहूदा, प्रभु यीशु का एक शिष्य, धर्मगुरुओं के पास गाया यह तय करने के लिए की प्रभु यीशु को किस प्रकार से पकड़वाएँ। धर्मगुरुओं ने यहूदा को इस के लिए इनाम देने का वादा किया। तो यहूदा प्रभु यीशु को पकड़वाने के मौके के तलाश में रहा कि चुप चाप उसे पकड़ लिया जाए जब भीड़ न हो। गुरु यीशु और उनके बारह शिष्य, जिस में यहूदा भी शामिल था, वे एक साथ बैठे कि त्यौहार मनाएँ और भोजन करें। प्रभु यीशु ने कहा, “मेरी बड़ी इच्छा थी कि दुःख उठाने से पहले मैं आप लोगों के साथ यह भोजन करूँ।”

सद्गुरु यीशु जानते थे कि परमात्मा ने उन्हें सभी चीजों पर अधिकार दिया। तो वे खड़े हो गए और अपने कोट को उतरा और अंगोछा लेकर अपनी कमर में बंधा और एक बड़े बर्तन में पानी भरा। और फिर अपने शिष्यों के पैर धोने लगे। और गमछे से, जो उनकी कमर में बंधी थी, उसी से पोंछने लगे।

उनके पैर धोने के बाद उसने अपने कोट को वापस पहन लिया और उनके साथ बैठ गए। फिर प्रभु यीशु ने शिष्यों से पूछा, "क्या तुम समझे जो मैंने किया? तुम मुझे गुरु और स्वामी कहते हो और तुम सही हो, क्योंकि यही सत्य है। और क्योंकि मैंने तुम्हारा स्वामी और गुरु होकर तुम्हारे पैर धोए तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए। मैंने तुम्हें एक नमूना दिखाया है कि जैसे मैंने तुम्हारे साथ किया वैसा ही तुम भी करो। यह सच है कि दास स्वामी से बड़ा नहीं है। तुम्ह यह चीज़ें जानते हो अब उन्हें करो।"

प्रभु यीशु ने रोटी ली और उसके लिए परमात्मा को धन्यवाद किया और अपने शिष्य को खाने के लिए दिया। उसने कहा, "यह रोटी मेरे शरीर को दर्शाती है। जो तुम्हारे लिए दी गयी है। मेरी याद में यही किया करो।" भोजन के बाद उसने कटोरा लिया और कहा, "यह रस परमात्मा की उस नयी प्रतिज्ञा का चिन्ह है जो लहू के बहने के द्वारा तुम्हें बचाएगी।"

उसके बाद उन्होंने प्रशंसा के गीत गाये और बहार एक पहाड़ी पर गए जो शहर से बहार था।

गिरफ़्तारी और मुकदमा

जब प्रभु यीशु अपने करीबी शिष्यों के साथ थे उसने कहा कि, "मैं आगे प्रार्थना के लिए जा रहा हूँ तब तक तुम लोग यही बैठो।"

कुछ देर बाद जब वह वापस अपने शिष्यों के पास आया उसने कहा, “देखो समय आ गया है। मुझे पकड़ने वाले यही हैं।”

और यहूदा, उसका एक शिष्य, एक भीड़ के साथ जो तलवार, लाठी लिए हुए थे आया। उन्होंने गुरु यीशु को पकड़ लिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। और उसके सभी करीबी शिष्य उसे छोड़ कर भाग गए।

वे गुरु यीशु को धार्मिक गुरुओं के मुखिया के घर लेकर गए जहाँ पर कई विद्वान और धार्मिक गुरु इकट्ठा हुए थे जो किसी को प्रभु यीशु के विरोध में साक्षी देने के लिए खोज रहे थे कि वे गुरु यीशु को मृत्यु दंड दिला सकें। तब जो धार्मिक गुरुओं का मुखिया था, वह खड़ा हो गया था और उसने प्रभु यीशु से कहा, “क्या तुम्हें अपनी सफाई मैं कुछ नहीं कहना है?” लेकिन प्रभु यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब मुखिया ने प्रभु यीशु से फिर कहा कि, “मैं तुमसे जीवित परमात्मा का नाम लेकर पूछता हूँ कि क्या तुम्ही प्रतिज्ञा के मुक्तिदाता, परमात्मा के पुत्र हो?” प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ। जैसे कि आपने कहा।” तब मुखिया ने अपने वस्त्र को फाड़ा और चिल्लाया, “अब हमें गवाहों की क्या आवश्यकता है? आप सभी ने सुन लिया कि इसने परमात्मा की निंदा की है। तब उन्होंने प्रभु यीशु के मुँह पर थूका और उन्हें घूंसा मारा।

सवेरे धार्मिक गुरुओं ने मिलकर इस बात की चर्चा की कि कैसे गुरु यीशु को सरकार द्वारा मृत्यु दंड दिलवाया जाए। वे प्रभु यीशु को बाँध कर राज्यपाल के पास ले गए।

अब प्रभु यीशु राज्यपाल के सामने खड़े थे। राज्यपाल ने उनसे पूछा, “क्या तुम इन लोगों के राजा हो?” प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ। जैसे की आपने कहा।” लेकिन जब धर्म गुरु उसके विरोध में बोल रहे थे प्रभु यीशु चुप थे। राज्यपाल ने पूछा “क्या तुम्हें यह सारे दोष जो तुम्हारे ऊपर लगाए जा रहे हैं सुनाई नहीं दे रहे हैं?” लेकिन प्रभु यीशु ने कुछ उत्तर नहीं दिया और राज्यपाल इस से बहुत आश्चर्य में पड़ गए।

तब राज्यपाल ने धर्मगुरुओं और जनता को एक साथ बुलाया। और उसने अपना फैसला सुनाया यह कह कर कि “तुम इस आदमी को लेकर आये हो और उस पर राज विद्रोह का दोष लगाते हो। मैंने इस की जाँच की है और उस में कुछ दोष नहीं पाया। इस मनुष्य ने ऐसा कुछ नहीं किया जिस से इसे मृत्यु दंड दिया जाए। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर छोड़ देता हूँ।” तब भीड़ से जोर से चिल्लाने की आवाज आने लगी कि, “इसे मार दिया जाए!” राज्यपाल ने लोगों को समझाया क्योंकि वह प्रभु यीशु को छोड़ देना चाहता था। लेकिन भीड़ चिल्लाने लगी, “उसे मार दिया जाए! उसे मार दिया जाए!”

तब राज्यपाल ने देखा कि इसका कोई हल नहीं है और शोर बढ़ता जा रहा हैं। तब उसने पानी लेकर अपने हाथ धोए और भीड़ से कहा कि, “इस आदमी के मृत्यु से मैं निर्दोष हूँ और इस का दोष तुम पर आए।” तब लोगों ने उत्तर दिया कि, “इसकी मृत्यु की ज़िम्मेदारी हम पर हो और हमारे संतानों पर।”

तब राज्यपाल ने प्रभु यीशु पर कोड़े लगवाकर उन्हें सैनिकों के हाथ में सौंप दिया कि उसे मृत्यु दंड दिया जाए।

महा बलिदान

यीशु और दो अपराधियों को मृत्यु दंड देने के लिए ऐसी जगह ले जाया गया जिस का नाम खोपड़ी था। उनके हाथों और पैरों में कील ठोक कर क्रूस पर चढ़ा दिया गया। और प्रभु यीशु के साथ दोनों अपराधी उसके ढाई और बाई, दोनों तरफ क्रूस पर थे।

भीड़ देख रही थी और पहरेदार ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, “इसने दूसरों को बचाया, अगर यह परमात्मा का भेजा हुआ मुक्तिदाता है तो खुद को बचा ले!”

एक अपराधी जो उसके साथ क्रूस पे चढ़ाया गया था उसने यीशु से कहा, “तो तुम्ही परमात्मा द्वारा भेजा मुक्तिदाता हो? अगर हो तो अपने आप को बचा के साबित करो और हमें भी बचा लो!।”

लेकिन दूसरे अपराधी ने उसे डांट कर कहा, “क्या तुम्हे परमात्मा का भय नहीं? तुम भी तो वाही दंड पा रहे हो और हमें तो न्याय पूर्वक दंड मिल रहा है लेकिन इसने तो कुछ भी गलत नहीं किया।” तब उसने कहा, “यीशु जी जब आप अपने राज्य में आये तो मुझे याद रखे।”

तब प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि आज ही तुम मेरे साथ स्वर्ग-लोक में होगे।”

इस समय तक दोपहर हो चुकी थी। लेकिन सारे देश में अंधकार फेल गया और तीन बजे तक अनधिकार छाया रहा। सूर्य से रौशनी जाती रही और प्रभु यीशु ने बड़े जोर से चिल्लाया, “पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूँ।” और यह कहकर मर गए।

वहाँ पर एक अच्छा धार्मिक गुरु था जो दूसरे गुरुओं से सहमत नहीं था। वह राजपाल के पास गया और प्रभु यीशु का शरीर ले जानी की अनुमति मांगी। फिर उसने शरीर को क्रूस से नीचे उतारा और उसे मलमल के चादर में लपेट कर एक नयी कब्र में रखा।

यह सब कुछ शुक्रवार को हुआ था। जब प्रभु यीशु के शरीर को ले जा रहे थे तब कुछ औरतें जो उनकी शिष्य भी थीं, साथ में गयीं। और उन्होंने कब्र को देखा जिसमे उसके शारीर को रखा गया था। एक बड़ा पत्थर प्रवेश द्वार पर लगा हुआ था। तब वे घर की ओर वापस लौट गयीं।

महा मृत्युंजय

प्रभु यीशु की मृत्यु के बाद, रविवार की सुबह-सुबह औरतें प्रभु यीशु की कब्र पर गयीं उनकी रीति रिवाज के अनुसार मृत शारीर पर मसाले का लेप लागाने। उन्होंने देखा कि द्वार का पत्थर हट गया था तो वे अन्दर गयीं लेकिन उन्हें उनका शरीर नहीं मिला। दो मनुष्य जो चमकीले वस्त्र पहने थे, प्रगट हुए।

औरतें यह देख कर बहुत दर गयी। तब उस आदमी ने कहा, “तुम एक जिंदा व्यक्ति को यहाँ क्यों खोज रही हो? वह यहाँ नहीं है। वह मृत्यु से जी उठे हैं। याद है उसने क्या कहा था? कि उसे पकड़वाया जाएगा और उसे मृत्यु होगी, और वह तीन दिन बाद जी उठेगा?”

कुछ समय बाद जब शिष्य इकट्ठे हुए और वे इस बारे में बात चीत कर रहे थे अचानक प्रभु यीशु वहाँ प्रगट हुए। उसने कहा, “तुम पे शांति हो”। लेकिन सभी लोग दर गए और सोचने लगे कि वे एक भूत को देख रहे थे। उसने कहा, “तुम्हें मुझ पर क्यों संदेह है? मेरे हाथों को देखो, मेरे पाँवों को देखो। तुम मुझे छूकर जान लो कि मैं भूत नहीं हूँ।” वे अभी भी विश्वास नहीं कर पा रहे थे लेकिन उन्हें आनंद और अचंभा दोनों हो रहा था। तब उसने उनसे पूछा, “क्या तुम्हारे पास कुछ खाने के लिए है?” उन्होंने उसे खाना दिया और उन्होंने खाया।

तब प्रभु यीशु ने उन्हें विस्तार से बताया कि यह सब परमात्मा की योजना पूरी करने के लिए हुआ। कि वह कष्ट उठाएं, मृत्यु को पाएं और फिर तीसरे दिन मृत्यु से जी उठें।

चालीस दिन तक प्रभु यीशु ने अपने भक्तों को शिक्षाएँ दी। उसने उनसे कहा, “मैं तुम्हें जल्दी ही छोड़ दूंगा पर जब मैं तुम्हें छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास दिव्य आत्मा को भेजूंगा। और जब तुम उसकी दिव्य आत्मा को ग्रहण करोगे, तब तुम्हें शक्ति मिलेगी - ऐसी शक्ति कि तुम सारे लोगों को मेरे बारे में बता सको। सारे संसार में जाओ लोगों को मेरे बारे में बतलाओ। उन्हें वे सारी बातें मानना सिखाओ जो मैंने तुम्हें सिखायी है। और जब वे अपना पूरा विश्वास मुझ पर रखें, तब उन्हें मेरी दीक्षा दो। और जल संस्कार के द्वारा उन्हें मेरा भक्त बनाओ। उन्हें इस दीक्षा से यह

सिखाओ कि उन्हें यह पता हो कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मुझे सौंप दिया है। इसका यह अर्थ होगा कि वे अपनी पाप से छुट गए हैं और मुझ पर विश्वास करने के द्वारा परमात्मा की ओर मुड़ गए हैं।"

और जब वह ये बातें कह ही रहा था कि यीशु आकाश की ओर ऊपर उठने लगे। जब शिष्य आकाश की और देख ही रहे थे दो ईश-दूत उन्हें नीचे आते दिखे, जिन्होंने उनसे पूछा, "क्यों तुम लोग आकाश की और देख रहे हो?" उन्होंने कहा, "सनातन गुरु यीशु एक दिन उसी प्रकार से वापस आयेंगे जैसा आपने उसे जाते हुए देखा।"

दिव्य आत्मा

प्रभु यीशु के शिष्य जो येरूशलेम के शहर में रह रहे थे उनके द्वारा भेजी हुई दिव्य आत्मा की बात जोह रहे थे।

प्रभु यीशु के जी उठेने के सात हम्फ्ते हो चुके थे और एक दिन जो एक महत्वपूर्ण त्योहार का दिन था उनके शिष्य एक जगह मिलने के लिए इकट्ठे हुए।

कुछ ही देर बाद, अचानक, वहाँ पर कुछ आवाज होने लगी जैसे कि अंधी तूफ़ान और यह आवाजें कमरे में भर गई। फिर आग की लपटों जैसी उन पर आ गयी और सभी पर प्रभु की दिव्य आत्मा भर गयी और वे प्रभु यीशु की इस दिव्य आत्मा कि शक्ति से दूसरी भाषाओं में बात करने लेगे।

उस जगह पर इस त्योहार के कारण बड़ी भीड़ थी और कई देशों के लोग आये हुए थे। और जब उन्होंने शिष्यों को बोलते हुए सुना तो वे कहने लगे "यह तो याहाँ के स्थानीय लोग हैं लेकिन ये तो हमारी मातृभाषा में परमात्मा का गुणगान गा रहे हैं।" वे वहाँ अचंभित हो कर खड़े रहे। "इसका क्या अर्थ हो सकता है?" वे एक दूसरे से पूछने लगे। लेकिन भीड़ में कुछ लोग उनका मजाक उड़ाकर कहने लगे, "आरे भाई ये सिर्फ पिए हुए हैं और कुछ भी नहीं है।"

तब प्रभु यीशु का एक शिष्य जिस का नाम पतरस था आगे आ कर भीड़ से कहने लगा कि, “आप में से कुछ कहते हैं कि यह लोग पिए हुए हैं। यह तो सुबह का समय है और इतनी सुबह कौन शराब पिता है? जैसे तुम सोच रहे हो ऐसा कुछ भी नहीं है परन्तु यह तो ईश-प्रवक्ताओं के द्वारा कही बात हो रही है। सुनो! परमात्मा ने प्रभु यीशु के आशचर्य कर्मों और चिन्हों को दिखाने के द्वारा सिद्ध किया कि प्रभु यीशु उनका भेजा हुआ मुक्तिदाता है, लेकिन तुमने उसकी हत्या कर दी। परन्तु परमात्मा ने उन्हें फिर से जीवित कर दिया। और अब वे परमात्मा के दाहिने सर्वोच्च सिंहासन पर बैठे हैं। और परमात्मा ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार प्रभु यीशु को अपना दिव्य आत्मा दिया ताकि वह हम पर दिव्य आत्मा उंडेले जैसे की आप आज सुनते और देखते हैं। तो तुम सब को यह साफ साफ पता हो कि परमात्मा ने प्रभु यीशु को स्वामी और मुक्तिदाता नियुक्त किया जिस की तुमने हत्या कर दी थी।”

पतरस के शब्दों ने उनको गहराई से छू लिया और उन्होंने शिष्यों से कहा कि, “भाइयों, हमें क्या करना चाहिए?” पतरस ने उत्तर दिया, “आप सब को अपने पापों से मुड़कर परमात्मा की ओर आना चाहिए और मुक्तिदाता यीशु के नाम में गुरु दीक्षा लेना चाहिए कि आप के पाप क्षमा हो जाएँ। तब आप परमात्मा के दिव्य आत्मा का वरदान प्राप्त करेंगे।”

पतरस बोलता रहा और जिन्होंने पतरस की बातों पर विशवास किया गुरु दीक्षा ली और लगबग तीन हज़ार सत्संग में जुड़ गए । वे अन्य भक्तों के साथ जुड़ गए और वे प्रभु यीशु की शिष्यता, संगती करने में, प्रभु भोज लेने और प्रार्थना करने में लौलीन हो गए। और प्रभु यीशु के शिष्यों ने बहुत सारे चिन्हों और चमत्कारों को किया। और प्रति-दिन परमात्मा भक्तों की संख्या बढ़ाते गए।

अफ़्रीकी

प्रभु यीशु के स्वर्ग जाने से पहले उसने अपने शिष्यों से प्रतिज्ञा की कि उनके पास यह शक्ति होगी कि वे सारे जगत में जाएँ और शुभ सन्देश सुनाएँ। और जो यीश में विशवास रखते थे वे हर जगह जाकर प्रभु यीशु का शुभ सन्देश लोगों को सुनाने लगे।

प्रभु यीशु का एक शिष्य जिसका नाम फिलीप था। और एक ईशदूत जो परमात्मा से आया हुआ था उसने फिलीप से कहा, “दक्षिण की ओर जाओ जो रेगिस्तानी रास्ता जाता है”।

तब वो जाता है और एक अफ़्रीकी देश के ख़ज़ांची से मिलता है जो अपने देश वापस जा रहा था अपनी पालकी में बैठा हुआ वह बड़ी जोर से ईश-प्रवक्ताओं की पुस्तक पढ़ रहा था।

प्रभु की आत्मा ने फिलीप से कहा “वहाँ जाओ और पालकी के साथ चलो”। फिलीप दौड़ के जाता है और सुनता है कि यह आदमी यह पढ़ रहा था, “वह भेड़ के सम्मान मार डालने को पहुँचाया जाएगा और जैसे मेमना अपने ऊन कटाने वाले के सामने चुपचाप रहता है वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।”

तब अफ़्रीकी आदमी फिलीप से पूछता है कि, “कृपया मुझे बताएँ कि ईश-प्रवक्ता अपने विषय में यह कहे रहे हैं या किसी और के विषय में?” तब फिलीप ने इसी शास्त्र से आरंभ करके प्रभु यीशु का शुभ सन्देश सुनाया।

रास्ते में चलते-चलते वे एक जल के स्थान पर पहुंचे और तब अफ़्रीकी ने कहा, “देखो यहाँ कुछ जल है। अब मुझे जल संस्कार लेने से क्या रोक सकता है?” फिलीप ने उत्तर दिया, “यदि आप सारे मन से विशवास करते है तो ले सकते हैं।” उस ने उत्तर दिया, “मैं विशवास करता हूँ कि प्रभु यीशु ही परमात्मा का पुत्र है।”

अफ़्रीकी आदमी ने पालकी को रोकने का आदेश दिया और वे पानी में गए जहाँ फिलीप ने उसे जल संस्कार दिया।

जेल के अधिकारी

प्रभु यीशु के शिष्य जगह जगह जाकर उसका शुभ सन्देश पुरे दुनिया में सुनाने लगे। उसके दो शिष्य पॉल और सिलास एक शहर से दुसरे शहर शुभ सन्देश सुनाने जाते हैं।

एक दिन वे प्रार्थना के स्थान पर जा रहे थे तो उन्हें एक दासी मिली जो दुष्ट आत्मा से ग्रसित थी जो एक भविष्य बतानी वाली थी और अपने मालिकों के लिए बहुत कुछ कमाती थी। वह पॉल के पीछे आके चिल्लाने लगी कि, “ये मनुष्य परमात्मा के दास हैं जो हमें मोक्ष के मार्ग की कथा सूनाते हैं।”

वह कई दिनों तक ऐसा ही करती रही। और जब पॉल थक गया वह मुड़कर उस दुष्ट आत्मा से कहा, “मैं तुझे प्रभु यीशु के ही नाम से आगया देता हूँ कि उस में से निकल जा!” और वह उसी घड़ी उस दासी से निकल गयी।

जब उसके मालिकों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा टूट गयी तो वे पॉल और सिलास को पकड़के चोक की अधिकारियों के सामने ले गए और कहा, “यह लोग पुरे शहर में हलचल मचा रहे हैं।” और चिलाते हुए यह कहा, “यह लोग लोगों को वह सिखा रहे हैं जो हमारे सभ्यता के विरुद्ध में हैं।”

तब भीड़ उनके विरोध इकट्टी हो गयी और पॉल और सिलास को बुरी तरह से मारा गया और जेल में डाल दिया गया। और दरोगा को आज्ञा दी कि उनपर निगरानी रखें तो दरोगा ने उन्हें भीतरी खाने में रखा और उन्हें बाँध दिया।

लगबग अधि रात को पॉल और सिलास प्रार्थना और प्रभु का भजन गा रहे थे और दूसरी खैदी उनको सुन रहें थें। तभी अचानक एक बड़ा भूकंप आया और जेल की नीव हिल गयी और तुरंत सब द्वार खुल गए और सब के बंधन खुल गए।

दरोगा जाग उठा और जेल के द्वार खुले देखकर समझा कि सारे कैदी भाग गए अतः उसने तलवार खिंच कर अपने आप को मार डालना चाहा। लेकिन पॉल ने चिल्लाते हुए कहा, “रुको! अपने आप को हानि न पहुंचाओं हम सब यही हैं।”

तब वह दिया मंगाकर भीतर के जेल की ओर भागा और काँपता हुआ पॉल और सिलास के आगे गिरा। और फिर उन्हें बाहर लाकर उनसे कहा, “हे महापुरुषों, मोक्ष पाने के लिए मैं क्या करूँ?”

उन्होंने उत्तर दिया, “सद्गुरु यीशु पर विशवास करो तो तुम और तुम्हारा घराना मोक्ष पाएगा।” और उन्होंने उसको और उसके घर के सरे लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। और फिर दरोगा और उसके सारे घर के लोगों ने तुरंत गुरु दीक्षा ली और उन्हें अपने घर ले जाकर भोजन दिया और सारे घराने समेत सद्गुरु यीशु पर विशवास करके आनंद मनाया।

अगले दिन सुबह शहर के अधिकारीयों ने पॉल और सिलिया को छोड़ दिया।

सद्गुरु यीशु की वापसी

शिष्य पॉल और सिलास की यात्रा ज़ारी रही और एक दिन वे एक शहर को पहुंचे जहाँ पॉल ने कई लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बताया। वे लोग अब्राहम के वंशज थे। पॉल ने उनसे कहा, “यह यीशु जिनकी कथा मैं सुनाता हूँ, यही प्रतिज्ञा का मुक्तिदाता है।” बहुतों ने उसपर विशवास किया लेकिन कई लोग उनसे जलने लगे। तो वे कुछ दुष्ट लोगों को बुलाकर वहाँ भीड़ इकठ्ठा किया और नगर में हुल्लाड़ मचाने लगे। पॉल और सिलास को खोजने के लिए उन्होंने कुछ यीशु भक्तों के घरों पर भी हमला किया कि वे उन्हें खींचकर बहार लाएँ। जब वे उन्हें नहीं खोज पाए तो वे दुसरे यीशु भक्तों को खींचकर बहार लाने लगे। और उन्हें शहर के अधिकारीयों के पास ले गए। और वे उनसे कहने लगे, “पॉल और सिलास सारे जगत में तबाही मचा रहे हैं और अब वे हमारे शहर के लोगों को तंग कर रहे हैं।” कहकर वे लोग चिल्लाने लगे कि, “इनमें से किसी एक ने पॉल और सिलास को अपने घर में जगह दी है।”

परन्तु उल्टा यह सुनकर शहर के अधिकारी घबरा गए और उन्होंने भक्तों को छोड़ दिया। और उसी रात पॉल और सिलास के सुरक्षा के लिए भक्तों ने उन्हें वहाँ से भेज दिया।

लेकिन पॉल कभी भी उस शहर के भक्तों को नहीं भुला और उसने कई बार उनसे जाकर मिलने की कोशिश की परन्तु यह नहीं हो पाया। तो पॉल ने अपने एक मित्र को इन भक्तों से मिलने के लिए भेजा कि वह उन्हें उत्साहित करे। जब उसका मित्र वापस आकर पॉल को वहाँ का समाचार बताया तो वह आनंद से भर गया यह जानकर कि भक्त इतनी कठिनाई और उत्पीड़न में भी प्रभु यीशु के पीछे चल रहे हैं। तो उसने यह निश्चय किया कि वह भक्तों को एक पत्र लिखेगा।

और उसने पत्र में कहा, "हम अपनी प्रर्थानों में तुम्हे सदा स्मरण करते हैं और तुम सब के लिए परमात्मा का धन्यवाद करते हैं। इस बड़े क्लेश के बावजूद तुम ने प्रभु यीशु का सन्देश को मानकर ग्रहण किया। परिणाम स्वरूप तुम इस नगर के भक्तों के लिए आदर्श बने हो। ये भक्त जन खुद ही बताते हैं कि तुम कैसे मूर्तियों से मुड़कर परमात्मा की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे ईश्वर की सेवा करो। और वे बताते हैं कि तुम परमात्मा के पुत्र के स्वर्ग से वापस आने का इंतज़ार कर रहे हो जिन्हें उसने मरे हुओं से जिलाया अर्थात सनातन सद्गुरु यीशु।"

"और जब प्रभु यीशु स्वर्ग से वापस आएँगे तब बड़ी ललकार सुनाई देगी और सब से पहले सभी मृत भक्त जी उठेंगे और उनके साथ सभी भक्त जो जीवित हैं बादलों में उठा लिये जाएँगे की हवा में प्रभु यीशु से मिले। इसके बाद हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इन शब्दों के द्वारो एक दुसरे को उत्साहित करते रहो।"